

मौसम की गर्मी या कुछ और..

प्रकृति के सामने किसी की नहीं चलती है। यह जीवन का चक्र है। इसी में मौसम का आना -जाना लगा रहता है। कभी जाड़ा, गर्मी तो कभी बरसात। बस रह जाती हैं उसकी यादें। यह जीवन का शाश्वत सत्य है। यह काल की तरह जीवन में बना रहता है। बहरहाल मौसम तेजी के साथ बदल रहा है। अभी दो दिन पूर्व जहाँ ठंड की अनुभूति हो रही थी, अब गर्मी का एहसास होने लगा है। फरवरी महीना अपने अंतिम पढ़ाव पर है। अभी होली का त्योहार आना भी बाकी है। लेकिन इससे पहले ही मौसम ने करवट ले ली है। दिन में गर्मी का एहसास हो रहा है। हालांकि, सुबह शाम ठंड अभी बाकी है। मौसम विभाग की मानें तो दो से तीन दिनों में पारा ऊपर चढ़ेगा। आगामी कुछ दिनों में मौसम में और बदलाव की संभावना है। झारखंड के पलामू में तामान बढ़ा है। मंगलवार को 5.5

मौसम विभाग की मानें
तो दो से तीन दिनों में पारा
ऊपर चढ़ेगा। आगामी
कुछ दिनों में मौसम में
और बदलाव की
संभावना है। झारखण्ड के
पलामू में ताममान बढ़ा है।
मंगलवार को 5.5 डिग्री
सेल्सियस पर पहुंच गया।

तन डिग्री साल्सवेस का गिरावट
आने की संभावना है। हालांकि,
पिछले कुछ दिनों से रांची और
आसपास के जिलों में दोपहर के समय तेज धूप खिलने से गर्मी महसूस
होने लगी है। यही हाल सभी जगहों का करीब -करीब है। अधिकतम
तापमान 30 डिग्री तक पहुंच जाने की वजह से अनुमान लगाया जा
रहा है कि इस बार गर्मी कहर बरपायेगी। इस स्थिति में लोगों के सामने
इस बार जल संकट की समस्या भयावह होने की संभावना से भी
इनकार नहीं किया जा सकता है। कारण पिछले साल अक्तूबर में बारिश
नहीं हुई है। जिस कारण धरती की सतह सूख गयी है। नमी कम होने
से वातावरण और गर्म हो रहा है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि जल
संकट का लोगों को समाना नहीं करना पड़े, इसके लिए अभी से उसके
निराकरण की दिशा में प्रयास शुरू कर देनी चाहिए। ऐसा देखा जाता
है कि पानी की समस्या पिछले कई सालों से मौसमी समस्या लोग मानते
हैं। नेता पानी के लिए अगले कुछ दिनों में मौसमी बाजा बजायेंगे।
कारण यह गर्मी का मौसम है। इसके सम्पूर्ण निवारण की दिशा में आज
तक कोई फहल का नहीं होना यह दर्शाता है कि हमारी चेतना में दीमक
लग गये हैं। इस स्थिति में किसी अच्छे डॉक्टर से शल्य चिकित्सा की
जरूरत है। राज्य की वर्तमान हेमन्त सरकार इस गंभीर विषय को संज्ञान
में ले। तभी जाकर इसका इलाज संभव है। कारण प्रत्येक साल हम
सब प्रकृति के साथ हो रही नाइंसाफी को बहुत दिनों तक नजर अंदाज
नहीं कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार को शिष्टाचार मानने वालों पर कार्रवाई

इन दिनों छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के लगभग एक दर्जन नेताओं के ठिकानों पर प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी के छापें की कार्रवाई चल रही है। इससे कांग्रेस में बौखलाहट देखने को मिल रही है, पार्टी के नेताओं का कहना है कि इस तरह के हथकंडों से डराया नहीं जा सकता। केंद्रीय एजेंसियां- ईडी, सीबीआई अथवा आयकर विभाग इन दिनों राजनीतिक दलों एवं नेताओं पर कार्रवाई करती हुई नजर आ रही हैं, आजादी के बाद से भ्रष्टाचार एवं घोटालों पर नियंत्रण के लिये आवाज उठती रही है, इसके लिये आन्दोलन एवं अनशन भी होते रहे हैं, लेकिन सबसे प्रभावी तरीका केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई एवं न्यायालयों की सख्ती ही है, जो भ्रष्टाचारियों पर सीधा हमला करती है। देश में सर्वाधिक भ्रष्टाचार राजनीतिक दलों में ही व्याप रहा है, इसलिये अब तक केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाईयां उन पर प्रभावी नहीं हो पा रही थीं। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सत्ता हासिल करते ही भ्रष्टाचार के खिलाफ कमर कसी है, जिसका असर देखने को मिल रहा है। भले ही इन दिनों हो रही केन्द्रीय एजेंसियों की कार्रवाई को राजनीतिक प्रेरित बताया जाये, लेकिन इसे भ्रष्टाचार को समाप्त करने की दिशा में एक कारण एवं प्रभावी कदम कहा जायेगा। दिल्ली में आम आदमी पार्टी हो या कांग्रेस या अन्य राजनीतिक दल, जब-जब उनके भ्रष्टाचार उजागर हुए, केन्द्रीय एजेंसियों ने उनके खिलाफ कार्रवाई की, उसे डरने का हथकंडा कहा गया हो या राजनीति से प्रेरित, जनता ने एजेंसियों का स्वागत ही किया है। भ्रष्टाचार को शिष्टाचार मानने की मानसिकता से उबरना ही होगा। इन दिनों छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के लगभग एक दर्जन नेताओं के ठिकानों पर प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी के छापें की कार्रवाई चल रही है। इससे कांग्रेस में बौखलाहट देखने को मिल रही है, पार्टी के नेताओं का कहना है कि इस तरह के हथकंडों से डराया नहीं जा सकता। प्रश्न यह है कि राजनीतिक दलों का सर्वोच्च नेतृत्व अपने नेताओं के भ्रष्टाचार करनामों पर खुद सख्त क्यों नहीं होता? क्यों भ्रष्टाचार पर ये दल संरक्षण की मुद्रा में दिखाई देते हैं? चूंकि ईडी की यह कार्रवाई राज्य में कांग्रेस के अधिवेशन के पहले हुई है इसलिए उसके कुछ ज्यादा ही राजनीतिक मायने देखे जा रहे हैं वैसे यह अधिवेशन न होता तो भी यह तय था कि कांग्रेस की ओर से ईडी को कोसा जाता और यह आरोप लगाया जाता कि केंद्रीय एजेंसियों का अनुचित इस्तेमाल किया जा रहा है। वास्तव में यह वह आरोप जो हर उस राजनीतिक दल की ओर से उछाला जाता है जिसके नेता ईडी सीबीआई अथवा आयकर विभाग की जांच के दाये में आते हैं छत्तीसगढ़ में जो छापेमारी हुई, वह अवैध कोयला खनन के मामले में हुई, जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों समेत नौ लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पता नहीं इस घोटाले का सच क्या है, लेकिन आज कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि राज्यों में राजनीतिक और प्रशासनिक स्तर के भ्रष्टाचार पर लगाम लगी है। नेताओं और नौकरशाहों के भ्रष्टाचार की आपातिक दिन अने वाली खबरें यही बातर्ती हैं कि केंद्रीय एजेंसियां डाल-डाल हैं तो भ्रष्टता का जाल पात-पात के विडम्बना तो यह है कि नेतृत्व करने वाली ताकतें भ्रष्टाचार में लिप्त हैं लेकिन आज भ्रष्टाचार के खिलाफ देश में जो माहोल बना है, वह निश्चय ही बहुत बड़ी बात है और एक सुधु संकेत है। हमें इस मैकेनिकों को बर्बाद नहीं करना चाहिए निश्चित ही भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का जो केन्द्रीय एजेंसियों की कार्रवाई का तरीका अपनाया जा रहा है, वह सही तरीका है। पूर्व में कुछ लोग अनशन और भूख हड्डाताल के द्वारा इसके खिलाफ लड़ाई का हथियार बनाते रहे हैं। मेरा मानना है कि यह गलत तरीका है। अनशन में मुद्रा पीछे छूट जाता है और अनशन करने वाले आदमी पर सारा ध्यान केंद्रित हो जाता है। मुद्रे को पीछे छोड़कर हम कुछ हासिल नहीं कर सकते

केंद्रीय एजेंसियां- ईडी,
सीबीआई अथवा आयकर
विभाग इन दिनों राजमीतिक
दलों एवं नेताओं पर
कार्रवाई करती हुई नजर
आ रही हैं, आजादी के बाब
से भ्रष्टाचार एवं घोटालों पर
नियंत्रण के लिये आवाज
उठती रही है।

तमाम कोशिशों के बावजूद भ्रष्टाचार
और घोटालों का घटाटोप मौसम है,
ऐसा कुछ भी कह पाना भले
मुश्किल हो, जो भारत या इसके
लोगों की जिंदगी पर उजली रोशनी
डालता हो। भारत अपनी दुश्वारियों
में लस्त-पस्त उस मध्ययोगीन योद्धा
की तरह दिखता है, जौं जंग के
मैदान में आहें भर रहा है। कोई नहीं
जानता, किसके दामन में कितने दाग
हैं? कोई ऐसा नहीं जिस पर यकीन
किया जा सके, धरती का कोई कोना
नहीं, जिसके नीचे दबा कोई घोटाला
खुदाई का इंतजार न कर रहा हो
लेकिन यही मैके होते हैं, जब
किसी देश के सच्चे चरित्र का पता
चलता है। आगे-पछे फैशन के
तहत हजारों जुमलों में किसी समाज
को बहलाया जा सकता है, लेकिन
बुरे वक्त में नहीं। भारत के चरित्र
को परखने का भी यही समय है और
मैं समझता हूँ, इस पड़ताल की
शुरूआत उन गलतफहमियों को
उधाड़े जाने से होनी चाहिए।



की क्षमता को भी बढ़ावा दे

पूर्वोत्तर का कृषि-बागवानी क्षेत्र संभावनाओं से भरपूर है और बजट में इसके उपयोग के लिए कई अवसर मौजूद हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र को सफलता के उदाहरण के रूप में पेश किया जा सकता है और प्राकृतिक खेती के तहत 1 करोड़ किसानों को लाने का लक्ष्य हासिल करने की बात देश को प्रेरित कर सकती है। इसी तरह, कृषि-त्वरक कोष इस क्षेत्र में स्टार्टअप्स की मौजूदा क्षमता को बढ़ावा देगा। इसके साथ ही, कौशल विकास, पर्यटन क्षमता के विकास, डिजिटलीकरण, सतत विकास पर जोर और हरित कार्यक्रम पर हमारा विशेष ध्यान; पूर्वोत्तर क्षेत्र के सतत विकास की दिशा में भारत सरकार द्वारा किये जा रहे मौजूदा प्रयासों का पूरक है। सुरक्षा और शांति इस क्षेत्र की एक प्रमुख चुनौती थी, लेकिन सरकार के निरंतर प्रयासों और राज्यों के घनिष्ठ सहयोग से, पूर्वोत्तर आज शांति और स्थिरता के एक अभूतपूर्व युग में प्रवेश कर गया है। 2014 के बाद से, इस क्षेत्र में उग्रवाद की घटनाओं में 74 प्रतिशत की कमी आयी है और 8,000 से अधिक युवा आत्मसमर्पण करने के बाद उज्ज्वल भविष्य की कामना कर रहे हैं। इसी तरह, परिवहन व दूरसंचार संपर्क का विकास किसी क्रांति से कम नहीं है। 2014 से पहले सिर्फ असम ही रेलवे से जुड़ा था। अब अगरतला और इटानगर को भी जोड़ दिया गया है तथा अन्य राजधानियों को भी जल्द ही रेल-सुविधा प्राप्त होगी।

अब राज्य का भी भय हो रहा था। इसीलिए श्री कृष्ण और बलराम को शिक्षा दीक्षा के लिए उज्जैन भेज दिया गया। उज्जैन में दोनों भाइयों ने संदीपनी ऋषी के आश्रम में शिक्षा और दीक्षा प्राप्त करना आरंभ कर दिया। उसी आश्रम में श्री कृष्ण की मित्रता सुदामा से हुई। वे घनिष्ठ मित्र थे। उनकी मित्रता के चर्चे काफी दूर दूर तक थे। शिक्षा - दीक्षा के साथ साथ अस्त्र शस्त्र का ज्ञान प्राप्त करके वे वापस आ गये तथा द्वारिकापुरी के राजा बन गये। मध्यप्रदेश के धार जिले में अमझेरा नामक एक कस्बा है। वहाँ उस समय राजा भीष्मक का राज्य था। उसके पांच पुत्र तथा एक बेहद ही सुंदर पुत्री थीं। उसका नाम रुक्मिणी था। वो अपने आप को श्री कृष्ण को समर्पित कर चुकी थीं। जब उसको उसकी सखियों द्वारा यह पता चला कि उसका विवाह तय कर दिया गया है। तब रुक्मिणी ने एक बुद्ध ब्राह्मण के हाथों श्री कृष्ण को सदेश भेजवा दिया। जैसे ही यह सदेश श्री कृष्ण को प्राप्त हुआ वे वहाँ से तुरंत निकल पड़े। श्री कृष्ण ने आकर रुक्मिणी का अपहरण कर लिया और द्वारिकापुरी ले लाये। श्री कृष्ण का पीछा करते हुए शिशुपाल भी आ गया जिसका विवाह रुक्मिणी से तय हुआ था। द्वारिकापुरी में दोनों भाइयों श्री कृष्ण और बलराम की सेना तथा शिशुपाल की सेना के साथ भयंकर युद्ध हुआ।

खरीद-फरोख्त की भट्टी में जलता बचपन



मं

बचपन बचाओ आंदोलन
और रेलवे सुरक्षा बल का
संयुक्त अध्ययन 'रेलवेज-
मेकिंग द ब्रेक इन
ट्रैफिकिंग' आंखें खोलने के
लिए काफी है। बचपन
बचाओ आंदोलन अब तक
1,13,500 बच्चों को क्रूर
पंजों से छुड़ा चुका है।

दनियादारी

होनी चाहिए। अच्छी बात यह है कि इस समय दुनियाभर में नई बाल सुरक्षा नीति की जरूरत महसूस की जा रही है। सत्यार्थी और चंद्र ने इस पर काम भी शुरू कर दिया है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्ट में 2021 में रोजाना आठ बच्चों की तस्करी और उनका उत्पीड़न होने संबंधी आंकड़ा दिया गया है। इस आंकड़े के मुताबिक इस साल भारत में मानव तस्करी के कुल 2,189 मामले दर्ज किये गये। 2020 में यह संख्या 1,714 थी। विशेषज्ञों ने रिपोर्ट पर चिंता जताते हुए देश में सख्त मानव तस्करी रोधी कानून लागू करने की मांग की थी। कहते हैं बाल शोषण दुनिया का सबसे बुरा काम है। बुरे काम का नरीजा भी बुरा ही होता है। मशहूर फाइनेंशर अमेरिका का जेफरी एप्स्टिन यौन संरौपित के लिए बच्चों की खरीद-फरीद्ध के लिए दुनिया में कुख्यात रहा है।

